चामुंडा देवी चालीसा

॥ दोहा ॥

नीलवरण माँ कालिका, रहती सदा प्रचंड।
दस हाथो मई ससत्रा धार देती दुष्ट को दंड॥
मधु केटभ संहार कर करी धर्म की जीत।
मेरी भी पीड़ा हरो हो जो कर्म पुनीत॥

॥ चौपाई ॥

नमस्कार चामुंडा माता,

तीनो लोक मई मई विख्याता॥

हिमाल्या मई पवितरा धाम है,

महाशक्ति तुमको प्रणाम है॥1॥

मार्कंडिए ऋषि ने धीयया,

कैसे प्रगती भेद बताया॥

सूभ निसुभ दो डेतिए बलसाली,

तीनो लोक जो कर दिए खाली॥2॥

वायु अग्नि याँ कुबेर संग,

सूर्या चंद्रा वरुण हुए तंग॥

अपमानित चर्नो मई आए,

गिरिराज हिमआलये को लाए॥3॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

भद्रा-रॉद्रा निट्टया धीयया,
चेतन शक्ति करके बुलाया॥
क्रोधित होकर काली आई,
जिसने अपनी लीला दिखाई॥4॥

चंदड़ मूंदड़ ओर सुंभ पतए,
कामुक वेरी लड़ने आए॥
पहले सुग्गीव दूत को मारा,
भगा चंदड़ भी मारा मार॥5॥

अरबो सैनिक लेकर आया,
द्रहूँ लॉकंगन क्रोध दिखाया॥
जैसे ही दुस्त ललकारा,
हा उ सबद्ड गुंजा के मारा॥6॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

सेना ने मचाई भगदड़,
फादा सिंग ने आया जो बाद॥
हत्टिया करने चंदड़-मूंदड़ आए,
मदिरा पीकेर के घुर्रई॥7॥

चतुरंगी सेना संग लाए,
उचे उचे सीविएर गिराई॥
तुमने क्रोधित रूप निकाला,
प्रगती डाल गले मूंद माला॥8॥

चर्म की सॅडी चीते वाली,
हड्डी ढ़ाचा था बलसाली॥
विकराल मुखी आँखे दिखलाई,
जिसे देख सृिस्टी घबराई॥9॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

चंदड़ मूंदड़ ने चकरा चलाया,
ले तलवार हू साबद गूंजाया॥
पपियो का कर दिया निस्तरा,
चंदड़ मूंदड़ दोनो को मारा॥10॥

हाथ मई मस्तक ले मुस्काई,
पापी सेना फिर घबराई॥
सरस्वती मा तुम्हे पुकारा,
पड़ा चामुंडा नाम तिहरा॥11॥

चंदड़ मूंदड़ की मिरतट्यु सुनकर,
कालक मौर्या आए रात पर ॥
अरब खराब युध के पाठ पर,
झोक दिए सब चामुंडा पर॥12॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

उगर्रे चंडिका प्रगती आकर,
गीडदीयो की वाडी भरकर॥
काली ख़टवांग घुसो से मारा,
ब्रह्माड्ड ने फेकि जल धारा॥13॥

माहेश्वरी ने त्रिशूल चलाया,
मा वेश्दवी कक्करा घुमाया॥
कार्तिके के शक्ति आई,
नार्सिंघई दित्तियो पे छाई॥14॥

चुन चुन सिंग सभी को खाया,
हर दानव घायल घबराया॥
रक्टतबीज माया फेलाई,
शक्ति उसने नई दिखाई॥15॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

रक्त गिरा जब धरती उपर,
नया डेतिए प्रगता था वही पर ॥
चाँदी मा अब शूल घुमाया,
मारा उसको लहू चूसाया ॥16॥

सूभ निसुभ अब डोडे आए,
सततर सेना भरकर लाए॥
वाज्ररपात संग सूल चलाया,
सभी देवता कुछ घबराई॥17॥

ललकारा फिर घुसा मारा,
ले त्रिसूल किया निस्तरा॥
सूभ निसुभ धरती पर सोए,
डेतिए सभी देखकर रोए॥18॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

कहमुंडा मा ध्ृम बचाया,
अपना सूभ मंदिर बनवाया॥
सभी देवता आके मानते,
हनुमत भेराव चवर दुलते॥19॥

आसवीं चेट नवराततरे अओ,
धवजा नारियल भेट चाड़ौ॥
वांडर नदी सनन करऔ,
चामुंडा मा तुमको पियौ॥20॥

हिन्दीपथ.कॉम

अन्य चालीसा पढ़े

- हनुमान चालीसा
- शिव चालीसा
- दुर्गा चालीसा
- शनि चालीसा
- गणेश चालीसा
- लक्ष्मी चालीसा
- राम चालीसा
- विष्णु चालीसा
- गायत्री चालीसा
- काली चालीसा
- भैरव चालीसा
- सरस्वती चालीसा
- कृष्ण चालीसा
- सूर्य चालीसा
- महावीर चालीसा
- साईं चालीसा
- महाकाली चालीसा
- तुलसी चालीसा
- बगलामुखी चालीसा
- गोरख चालीसा
- गोपाल चालीसा
- नवग्रह चालीसा
- रविदास चालीसा
- बाला जी चालीसा
- महालक्ष्मी चालीसा
- पार्वती चालीसा

- खाटू श्याम चालीसा
- रामदेव चालीसा
- राधा चालीसा
- विश्वकर्मा चालीसा
- पितर चालीसा
- बटुक भैरव चालीसा
- जाहरवीर चालीसा
- गिरिराज चालीसा
- नर्मदा चालीसा
- प्रेतराज चालीसा
- संतोषी चालीसा
- गंगा चालीसा
- चामुंडा देवी
- शारदा चालीसा
- ललिता चालीसा
- अन्नपूर्णा चालीसा
- श्री वैष्णो चालीसा
- परशुराम चालीसा
- विन्ध्येश्वरी चालीसा
- ब्रह्मा चालीसा
- शाकम्भरी चालीसा
- राणी सती चालीसा
- गंगाराम चालीसा
- बालक नाथ चालीसा
- मोहन राम चालीसा
- शीतला चालीसा
- वीरभद्र चालीसा
- मनसा देवी

- नरसिंह चालीसा
- ज्वाला चालीसा
- नैना देवी चालीसा
- कैला चालीसा
- जीण चालीसा
- कुबेर चलीसा
- चित्रगुप्त चालीसा

हिन्दीपथ.कॉम